त्रवः α) sodann, darauf: भगवित्। कि भूषा स्रवी वृषं भगवितः स्पाम R.V.1, 164,40. शिवो भूता मर्ख्यमिये म्रेष्टी सीट् शिवस्त्वम् VS. 12,17. म्रह्माँदै प्रजाः प्रजायते । याः काञ्च पृथिवीं श्रिताः । स्रधा स्रवेनैव जीवति । स्रधैनद्पिय-ह्यत्रतः । TAITT. UP.2, 2. प्रवेशयामासुर्यो पुरंदर्निवेशनम् INDR. 3, 2. SUND. 1, 12. R. 3, 22, 34. पेन भूतान्यशेषिण द्रद्यस्यात्मन्यवी मिष zuerst in dir, sodann in mir BBAG. 4,35. क्तस्तं प्राप्स्यप्ति स्वर्गे जीवन्गृक्मया पशः Раńкат. IV, 73. म्रद्या यस्य स्वं भवति भवति कास्य स्वम् Вян. А́я. Uр. 1, 3, 25. म्राभ्या इन्देर अधीतमंबा म्राभ्या व्याकरणमधीयते P. 2, 4, 32, Sch. 33, Sch. Pat. zu P. 8, 1, 26. und so, eben so, und auch: युवं र्ह स्था भिषत्री भेषुजेभिर्घो रू स्वा र्घ्याई रघ्येभिः। ख्रेबी रू तुत्रमधि पत्य u. s. w. R.V. 1,187,6. इन्हें मित्रं वर्रणमृश्चिमीक़्र्यो दिव्यः स सुपूर्णः 164,46. 191,1.2. 10,85,2. VS.11,82. 12,97. 23,60. AV. 6,138,2. Ait. Br. 2, 35 (s. u. 环-णिमन्). तिर्दितितद्याे म्रविदिताद्धि Kenop. 3. स्त्रिया रत्नान्ययाे विद्या धर्म: M. 2, 240. 3, 161. Brahman. 1, 31. Crut. 35. Nach तत: N. 17, 34. म्रेया ऋषि ÇAT.Ba.1,1,3,3. यदि — श्रवेश ऋषि 3,3,20. u. s. w. — β) und doch: म्रत्री पुत्ती ऽवसातारमिच्हार्या भ्रपुतं पुनबद्दवन्वान् RV.10,27,9. — ү) und darum, darum: वाता वि वात्ययमित् । म्रेथा इन्द्रीय पातवि सुन् हु.v. 1,28,6. — δ) in den ind. Wörterb. = 冠 3. AK.1,1,7,18.2,1,6. Trik.2, 4,11. 7,11. — ε) म्रयो वा = म्रय वा (s. u. b.) oder auch: राजतीर्भाजनै: — म्रिया वा राजतान्वितै: M.3,202. — b) म्रय वा (म्रयवा) α) oder auch, oder: दष्टपूर्वाय वा स्नुता N.1,13. 24,4. मुऐंडा वा त्रिटली वा स्पाद्य वा स्पाद्धि-खातटः M.2,219. समस्तिर्य वा पृथक् 7,198. 8, 240. 274. 402. 9, 283. 11, 114. R. 2,75,14. 5,31,41. Hir. I,51. मय वा — मय वा entweder — oder Вванмам. 3, 13. 14. न — म्रय वा weder — noch: न न्त्येद्य वा गायेत м. 4,64. नायं प्रतिबलः — म्रय वा सूर्वरात्तसाः Hɪp.3,8. auch mit wiederholter Negation: नैव क्रीधं गमिष्यामि न च वद्ये क्यं चन। श्रय वा नेाव्कु-मिष्यामि संवत्सर्शतान्यपि Viçr. 14, 18. getrennt: पालगुनं वाय चैत्रं वा मासा प्रति M. 7, 182. कार्त्तिके वाय चैत्रे वा Pahkar. III, 36. व्यसने वाय कृट्क्रे वा भये वा तीवितासके R.4,6,10. das 2te वा fehlt: येन स्याह्मयुता वाय (वा gehört zu लघुता) पीडा Рамкат. I, 399. म्रयापि वा dass.: सम्-त्यानव्यपं दाप्यः सर्वद्राउमयापि वा M.8,287. रतदेव व्रतं कुर्युः — चान्द्रा-यणमद्यापि वा 11,117. Jå6x.1,143. मित्राद्याप्यमित्राह्य 7,207. =म्रय वापि Hɪp. 4,53. Внас. 11,42. = वाट्यय R. 6,101,24: न कि रामं तदा किश्चत् — म्रनुनेतुमथा वर्तुः द्रष्टुं वाप्यथ शक्नुवन् — β) durch म्रथ वा mit darauf folgender Angabe des wahren Sachverhaltnisses weist der Sprechende eine Behauptung, einen Vorsatz, eine Frage, ein Bedenken, die er so eben selbst ausgesprochen, als unstatthaft zurück. In der Uebersetzung können wir ein solches সম বা durch was rede (frage) ich? es verhält sich vielmehr so umschreiben: इरानीमेव धर्मासनाड त्थितस्य पुनकृपरे।धकारि कएविशिष्यागमनमस्मै नेात्सके निवेदितुम्। म्रय वा (aber doch, denn) म्रवि-म्रामा ४यं लोकतस्त्राधिकारः Çâk. 60, 18. 27, 17. 18. 104. तदन्वेषणाय य-तिष्ये। त्रयं वा ग्रवश्यमेव माधवसेना मया पूज्येन मोचियतव्यः Ж४८४. ९, ४. Pankar.21, 4. Çak.104, 22. कुत: फलामिक्तस्य । (wie kann dies hier einen Erfolg haben?) म्रय वा भवितव्याना द्वाराणि भवित सर्वत्र 15. 11, 10. 11. 17, 14. 33, 13. 41, 17. 60, 5. 85, 12. 93, 6. Vet. 29, 3. u. s. w. - \gamma) denn — ja, so z. В. in der im Раме́ат. (144, 8. 164, 7, 185, 21. 193, 18. u. s. w.) so häufig vorkommenden Verbindung: त्रयवा साधिद्म्च्यते. Dies ist das म्रव वा प्रसिद्धा, das auch durch तया कि erklärt wird, Sch. zu Çıç.1,29.

8, 22. Das u. a besprochene म्रय वा ist das म्रय वा पतात्तर. — ठ) oder wenn: प्रतीतस्व मुद्धतं लमय वा लर्त भवान् । एष पाति शिवः पन्याः N. 20, 12. — c) म्रय किम् wie denn anders? so ist es, allerdings Hân. 264 (मङ्गीकार). Çabdar. (स्वीकार) im ÇKDr. Çar. 28, 1. 61, 10. 108, 7, v. I. 109, 15. Hit. 60, 12. u. s. w. Die Prakṛt-Form म्रक्डं (Çar. 15, 5.) scheint dafür zu sprechen, dass म्रय किम् als ein Wort gesprochen worden sei. — d) म्रय किम् um wie viel mehr Çar. Br. 1, 1, 1, 8. — Vgl. das ursprünglich mit म्रय gewiss identische म्रघ.

म्रयकिम् s. u. म्रय ७, c.

अवार oder म्रवर्गी m. oder f. nur RV. 4,6,5: हिर्प पञ्च जीजनं सुवसीनाः स्वसीरा मृति प्राप्त विद्या । उपर्विधमवर्षी र द्रे प्रम्न स्वास पर्प्रां न तिरमम् ॥ Die in Naigh. 2,5. gegebene Erklärung (म्रवर्प: Finger) ist zwar dieser Stelle entnommen, aber augenscheinlich irrthümlich. Das Wort scheint Lanzenspitze zu bedeuten: Agni, welchen die zweimal fünf Schwestern (die Finger) zeugten, den um's Frühlicht erwachenden, den wie der Zahn der Lanze hellen, schönmündigen, scharf wie ein Beil; vgl. म्रवर्ष, म्रवर्ष, म्रवर्ष प्राप्त वेस्ते मृगा म्रवर्ष प्रविदेश हैं।

ञ्चयर्, श्रवयति gehen Naigh. 2, 14; wahrscheinlich zur Erklärung der folg. Ww. erfunden.

श्रवर्ष adj. lanzenspitzig, von Agni: নর্ঘ प्रजो में पाहि । शंस्य प्रश्नेन्में पाहि । श्रवर्ष पितुं में पाहि VS. 3, 37. (fehlt in der Kanya - Rec. und im Çat. Ba.) eben so Âçv. Ça. 2, 5. Mahlon. erklärt es durch শ্বননবান (s. d. vorang. Wort). — শ্বহর্যা; falsche Lesart statt শ্বহর্যা; Naigh. 2,5. — Vgl. শ্বহারি শ্বরুর্য adj. Lanzenspitzen zeigend, Spitzen schiessend, vom Feuer: ह्र-रिद्यां गुरुपतिमवर्षुम् RV. 7, 1, 1. = শ্বননবান্ Nia. 5, 10; vgl. শ্বহারি.

স্থার্থন m. N. pr. der älteste Sohn Brahman's Munp. Up. 1, 1, 1; vgl. স্থার্থন্

হ্বহার্মা 1) m. Çiva Trik. 1,1,45. — 2) der Atharvaveda Verz. d. B. H. No. 1173. — Vgl. মৃহার্কন্.

श्रयर्वणि m. 1) ein mit dem Atharvaveda vertrauter Brahman (শ্র-ঘর্বন্তান্). — 2) Hauspriester (पुराधस्) Med. ņ. 90. Wohl schlechte Lesart für স্বায়র্বিणি.

अँखर्वन् 1) m. a) der Feuer- und Somapriester: ख्र्मि ते मधुना प्रयो उद्य-विणो ख्रिशिख्यु: R.V. 9, 11, 2. आ सोम् मधुमतमं ध्रमे सिखाद्धर्विणा (hier ist Agni der Priester) 8, 9, 7. अर्थविषाविक्त्रियमाण: (Soma ist sein eigener Priester) VS. 8, 56. दश र्थान्त्रष्टिमत: शतं गा अर्थविन्यः । अस्त्यः पाय्वे उद्गि R.V. 6, 47, 24. 10, 48, 2. Brahman Med. n. 164. — b) A. in eine bestimmte Person gefasst, ist der erste Priester in unbestimmter Vorzeit, welcher das Feuer vom Himmel herabholt, Soma darbringt, Gebete übt: लामीग्र पुष्कराद्ध्यर्थवा निर्मन्यत । मूर्धा विस्थस्य वाघतः ॥ R.V. 6, 16,13. 15, 17. 10,21, 5. यामर्थ्या मनुष्यिता द्ध्यङ्घ्यमत्तेत 1,80,16. युत्तेर-र्थ्या प्रयमा विधारयत् 10,92,10. 1,83,15. अर्थवा पूर्णा चम्म यमिन्द्रापार्वि-भर्वाजिनीवते । तिस्मन्कृणाति मुक्तस्य भृतं तिस्मिन्दिन्द्वः पवते विश्वद्रा-नीम् ॥ AV. 18,3,54. er überwältigt mit wunderbaren Kräften das Dămonische und empfängt von den Göttern himmlische Gaben: अर्थवी-उद्योतिषा देव्येन सत्य धूर्वतम्बिन् न्याष्ठ R.V. 10, 87, 12. ein Gespräch Varuṇa's mit Atharvan, betreffend den Besitz einer wunderbaren